

अनारबाज़ी स्त्री. (फा.) किसी खुशी के मौके पर अनार (नामक फुलझड़ी-युक्त पटाखे) जलाना।

अनारी वि. (तत्.) अनार के रंग का, लाल पुं. (तत्.) 1. लाल रंग की आँखवाला कबूतर 2. एक प्रकार का समोसा 2. दे. अनाड़ी।

अनारूढ़ वि. (तत्.) [अन्+हि.आरूढ़] जो आरूढ़ न हो, जो सवार न हो, जो आसीन न हो।

अनारोग्य पुं. (तत्.) अस्वस्थता, बीमारी, जो आरोग्य न हो।

अनारोग्यक वि. (तत्.) अस्वस्थ, बीमार करने वाला, अस्वस्थकर, रोगजनक।

अनार्जव पुं. (तत्.) 1. जिसमें आर्जव, ऋजुता या सीधापन न हो, टेढ़ापन 2. कुटिलता, कपट।

अनार्तव पुं. (तत्.) आर्तव या ऋतु धर्म या मासिक धर्म या रजोधर्म का न होना या अवरोध वि. (तत्.) नियत ऋतु से पहले होने वाला, समय से पूर्व, बे-मौसम।

अनार्तव जल पुं. (तत्.) बिना ऋतु के बादलों द्वारा बरसाया गया पानी, बेमौसम की बरसात।

अनार्थिक वि. (तत्.) जो आर्थिक या धन संबंधी न हो, अलाभकर।

अनार्य वि. (तत्.) आर्यतर, आर्य जाति से भिन्न, अश्रेष्ठ।

अनार्यकर्मी वि. (तत्.) नीच कर्म करने वाला।

अनार्यज वि. (तत्.) अनार्य से उत्पन्न, जो आर्य से उत्पन्न न हो।

अनार्यता स्त्री. (तत्.) 1. अनार्य होने की अवस्था, भाव 2. नीचता, अधमता। 3. म्लेच्छपन।

अनार्यत्व पुं. (तत्.) अनार्यता, जो आर्य (विशेष व्यक्ति) के अनुरूप न हो, स्वभाव या आचरण में अशिष्टता, श्रेष्ठ या सम्माननीय व्यक्ति से भिन्न आचरण, व्यवहार।

अनार्ष/अनार्षय वि. (तत्.) 1. जो ऋषियों से संबंधित न हो 2. जो ऋषि सम्मत न हो 3. ऋषियों ने जिसका प्रयोग न किया हो 4. जो

ऋषियों द्वारा बताये गये नियमों आदिके विरुद्ध हो 5. अवैदिक व्या. पाणिनि से पहले के किसी प्राचीन ग्रंथ में संस्कृत की पाणिनीय व्याकरण से असंगत परंतु त्रुटिपूर्ण न माना जाने वाला पद प्रयोग विलो. आर्ष/आर्षय।

अनालंब वि. (तत्.) अवलंबहीन पुं. (तत्.) आश्रित न होने की स्थिति।

अनालंबन वि. (तत्.) निरवलंब, निराश्रय। पुं. (तत्.) आश्रित न होने की स्थिति।

अनालंबी वि. (तत्.) 1. जिसका कोई आश्रय, सहारा न हो, निराश्रय, आश्रयहीन, असहाय, बेसहारा। 2. जो किसी पर निर्भर, आश्रित न हो।

अनालस्य पुं. (तत्.) आलस्य न होना, आलस्य का अभाव, अकर्मण्यता का न होना, शारीरिक या मानसिक शिथिलता का न होना, सुस्ती न होना।

अनालाप वि. (तत्.) 1. मौन, चुप, शांत 2. मितभाषी, कम बोलने वाला पुं. (तत्.) मितभाषण, बातचीत का न होना।

अनालोकित वि. (तत्.) जो आलोकित न हो, जहां प्रकाश न किया गया हो।

अनालोचित वि. (तत्.) 1. जो देखा न गया हो। 2. जिसकी आलोचना, समीक्षा न की गई हो। 3. जिसका विवेचन न किया गया हो।

अनालोड़ित वि. (तत्.) 1. जिसका मंथन न हुआ हो, जिसे मथा, बिलोया न गया हो, अमंथित 2. जिसकी विचारपूर्वक छान-बीन न की गई हो, जिस पर विचार-मंथन न हुआ हो 3. जिसे क्षोभ न हो।

अनावंटित वि. (तत्.) जो आबंटित न किया गया हो, जिसका बंटवारा न किया गया हो।

अनावरण पुं. (तत्.) 1. आवरण हटाने की क्रिया या भाव, पर्दा हटाना 2. किसी महापुरुष आदि की मूर्ति या चित्र पर पड़ा आवरण हटाकर उसे सार्वजनिक करने का कार्य 3. उपर्युक्त के संबंध में होने वाला समारोह 4. धूप/हवा में खुला पड़ा रहना।